रात्रिक्लास 19/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बच्चों से बाबा पूछ रहे हैं सभी यह निश्चय बुद्धि है कि हम बापदादा के सम्मुख बैठे हैं; क्योंकि जानते हैं बाप दादा के सम्मुख बैठे हैं बाप से वर्सा लेने लिए। बाप और सृष्टि चक्र को तुम समझते हो। जानते होंगे फिर उस बाबा के पास आये हैं। जिसके पास हर 5000 वर्ष के बाद आते हैं और पुरुषार्थ कर सुखधाम के मालिक बनते हैं। हम पुरुषोत्तम संगमी बच्चे हैं और कलियुगी .... को छोड़ दिया है। जा रहे हैं। कैसे?.... बुद्धियोग बल वा याद की यात्रा से। औरों की यात्राएं अनेक हैं। तुम बच्चों की एक है। हर 5000 वर्ष बाद एक ही बार रूहानी यात्रा करते हैं। इसके लिए ही समझाया जाता है अंत मते जहां की याद। वहां जाकर पहुँचते हैं। यह है ही तुम बच्चों के लिए। बुद्धि में है हम घर जाये फिर सुखधाम जावेंगे। अभी दुःखधाम है यह तो समझते हो ना। निश्चय बुद्धि विजयन्ति। रावण पर विजय पाकर स्वर्ग़ में जावेंगे। ऐसे यूनिवर्सिटी में पढ़ने वालों के अन्दर में खुशी का पारावार न होना चाहिए। ऐसे तकदीरवान दुनियां में कोई नहीं होंगे। ऐ(से) नहीं यहां बाप समझाते हैं तब दिल में रखते हो। बच्चे जानते हैं हम देवताओं से भी उत्तम हैं; क्योंकि वही देवताओं के साथ रहते हैं यहां हम बाप के साथ रहते हैं। ईश्वरीय परिवार के बने हैं दैवी परिवार में जाने लिए। सहज समझाया जाता है ना। तुम हो रूहानी बच्चे। छोटे–2 बच्चे हो तो छोटी–2 बात भी समझाई जाती है। जानते हो हम बेहद के बाप के परिवार में हैं। ईश्वरीय परिवार के बने हैं स्वर्ग़ की राजाई प्राप्त करने लिए। तुम बच्चों को अथाह गुप्त खुशी होनी चाहिए। तुम बच्चों को शान्ति ऐसी है जैसे कोई शरीर से अलग हो शान्त हो जाते। तुमको समझाया जाता है यह पुरानी जूती है। हमको नई पहननी है। शरीर को जूती कहा जाता है। दूसरी जूती लेते हो। तुमको समझ है 84 का चक्र लगाया है। अभी आत्मा और शरीर दोनों ही तमोप्रधान हैं। फिर आत्मा को सतोप्रधान बनाने वाला सामने बैठे हैं। वह हमको एक्युरेट सिखलाते हैं।.....फ़र्क नहीं पड़ सकता। एक्युरेट वही समझाते हैं जो कल्प पहले समझाते हैं। निश्चय.....है ड्रामा है। सृष्टि का चक्र है जो फिरता रहता है। जैसे घड़ी की टिक–2 होती है वैसे.....रहता है। बाप निर्मोही भी बनाते हैं। देवी–देवताएं निर्मोही होते हैं। यह तो अज्ञान काल भक्तिमार्ग में भी कहते थे बाबा हम निर्मोही बनूँगा। सिवाय आप के और कोई से बुद्धि का योग नहीं लगावेंगे। बुद्धि कहती है स्वर्ग़ में तो सभी निर्मोही रहते हैं। रो–पीटने आद की दरकार ही नहीं। कई बच्चे मैसूर मद्रास के हैं ..... नहीं समझते होंगे तो इन्टर–प्रेटर समझाते रहेंगे। समझना है हम निर्मोही मोहजीत राजा बन रहे हैं। यह सभी बच्चों को निश्चय है। हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। गायन भी है मनुष्य से देवता किये.....; परन्तु अर्थ कुछ नहीं। तुम बच्चों की बुद्धि में अर्थ है। तुम जानते हो यह भारतवासी एक तो गुड्डियों की पूजा करते हैं तुमको यह देख वण्डर लगता है। पूजा करते हैं ऑक्युपेशन हो(को) जानते ही नहीं। यह तो वण्डर है ना। और बच्चे समझते भी हैं भक्त भगवान को ढूँढ़ते रहते हैं ठिक्कर–भित्तर में। तुमको ढूँढ़ने की दरकार ही नहीं। अभी तो तुम गोया उनके गोद में बैठे हो। गोद में वारिस बैठते हैं। यहां तो सभी पवित्र रहते हैं। अगर कोई अपवित्र छिपे हुये बैठे होंगे तो अपने तकदीर को लकीर लगाते हैं। और ही जास्ती अपने को नुकसान पहुँचाते हैं। होली बनना तो अच्छा है ना। अभी तुम अनहोली से होली बनते हो होली वर्ल्ड में जाने लिए। यह होली वर्ल्ड नहीं है। होली बन रहे हो सम्पूर्ण होली बने नहीं हो। बन जावेंगे तो फिर लड़ाई भी लग जावेगी। यहां होलीएस्ट आप होली बन रहे हो। जो अच्छे बच्चे पुरुषार्थी हैं वह तो समझते होंगे हम होली बन और दैवी गुण धारण करने से ही विजयमाला में पिरोये जावेंगे। माला सिमरी जाती है ना। आठ तो मशहूर हैं। 9 रत्न कहते हैं। नावहही (नवां है ही) रत्न बनाने वाला। उस लोहे की डब्बी में .... है। कहते हैं मेरे लिये सोने की डबली होती ही नहीं। मैं लोहे की डब्बी में ही बैठता हूँ। यह बातें भी तुम सुनते हो। तुम जानते हो अनेक बार गोल्डेन एज में फिर आयरन एज में आये हैं। यह भी वण्डर है। तुम बच्चों की बुद्धि में है

भक्तिमार्ग पूरा हुआ अभी ज्ञान मार्ग में है। फिर भक्ति मार्ग शुरू होगा। नॉलेज कितनी सहज है। सिर्फ़ दैवी गुण धारण करनी है। यह आँखें हैं नम्बरवन नुकसान कारक। बड़ा धोखा देती हैं। बाप समझाते हैं इसके बदली तुमको तीसरा नेत्र मिलता है उससे ही काम लेना है। अपन को आत्मा समझ सभी को आत्मा ही देखो। आत्माएं सभी भाई–2 हैं। देहअभिमान तोड़ते जाना है। देह के धर्म सभी छोड़ अपन को आत्मा समझ भाई–2 समझो। बाप को याद करो तो जन्म–जन्मांतर के पाप कट जावेंगे। ऐसे नहीं कि भूल जाता हूँ। फिर यात्रा होती ही नहीं। यात्रा तो कायदे सिरे करनी है। बाबा ने बताया है आठ घंटा थोड़ा–2 सर्विस करके फिर आठ घंटा यह सर्विस करनी है। फिर तुम्हारी अवस्था उड़ पड़ेगी। भागने चाहेंगे। जंक निकल जावेगी फिर उड़ जावेंगे। यहां जंक चढ़ी हुई है; इसलिए वापस कोई भी जा नहीं सकते हैं। हरेक को अपना–2 पार्ट मिला हुआ है। एक्टर्स हैं भिन्न–2 प्रकार के। कोई अच्छी रीत अपने एक्ट को, धर्म को जान गये हैं। समझ और बेसमझ का यह ड्रामा बना हुआ है। सभी बच्चे पुरुषार्थी हैं। पुरुषार्थ कर सम्मुख आते हैं। खुशी होती है। हम बेहद के बाप से और साकार ब्रह्मा बाबा सम्मुख बैठे हैं। उनके ही हम बने हैं। सो तो यह याद है। और याद है। बाप ने युक्ति ऐसी बताई है जिसको ही रीयल शान्ति कहा जाता है। तुम्हारी याद है जैसे डेड सायलेन्स हो जाते हो। तुम इस शरीर को छोड़ शान्तिधाम जाने वाले हो। स्वधर्म में टिको तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। यह सभी बातें तुम बच्चों की बुद्धि में है। बाबा रिपीट करते हैं रिफाइन करने। यहां तुम बैठे हो बेहद के बाप के पास जिससे फिर वर्सा मिलता है। मूंझने की कोई बात ही नहीं। बाप तो कहते हैं भल ..... आद करो आसक्ति तोड़नी है। सभी कुछ है ही ईश्वर का। मधुबन में आना यह भी यात्रा है। सबसे ऊँचे ते ऊँची यात्रा है। ऐसे नहीं वेद–शास्त्र आद पढ़ने से भगवान मिल जावेंगे। वा भगवान कोई रूप में आवेंगे। यहां तो कुछ भी बात नहीं। बहुत सहज है। फिर शरीर निर्वाह भी करते रहो और भविष्य में 21 जन्म लिये जमा करना है। बाप को व्यापारी, सौदागर भी कहते हैं; परन्तु थोड़े ही हैं। बाप कहते हैं बच्चो, जीते रहो। कहां माया मार न डाले। माँ–बाप बच्चों को कहेंगे जीते रहो। अपनी सम्भाल करनी है कहां माया घुसा न मार देवे। लिखते हैं बाबा मा(या) आपकी याद भूला देती है। जिस बाप से पदमापदम भाग्यशाली बन रहो हो उनको ही याद करते हो। तुम्हारी आयु बहुत बड़ी थी अभी छोटी है फिर योगबल से बड़ी बन जावेगी। जीते जी तुम्हारी बुद्धि है नई दुनियां में। अच्छा मीठे सिकीलधे बच्चों को याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।